جنوری ۲۰۱۴ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

January 2014





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

fo"k; lwph

जनवरी 2014ई०

***सफ़र व रबीउल अव्वल* 1435हि०**

कुरआन और निज़ामे हुकूमत

y§kd & आयतुलाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
vuqknd & जनाब मक़बूल हुसैन नक़वी जायसी

पाकिस्तानी बहुसंख्यको के गम्भीर विचार वाले उलमा में कौसर नियाज़ी साहब भी एक विशिष्ट स्थान रखते हैं किन्तु कितना ही विद्वान व्यक्ति क्यों न हो पुरानी परम्पराओं की जंजीरों से छुटकारा पाना उसके लिए बहुन कठिन होता है। अतः पाकिस्तानी पत्रिकाओं ने प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित जो उनके विचार प्रकाशित किए हैं वे स्पष्ट उस परम्परा पर आश्रित हैं जहां मनुष्य सोच और समझ की बातें करते करते एकाएक बेसोची समझी रटी–रटाई बातें करने लगता है। अतएव उन्होंने यह कह दिया कि ''इस्लाम ने निज़ामे हुकूमत के बारे में कोई स्पष्ट मार्गदर्शन नहीं दिया है'' हालांकि कुरआन मजीद में साफ साफ अंकित है किः–

''पैग़म्बर को मोमिनीन पर खुद उनके नुफूस से ज़्यादा इख़्तियार है'' अब जबकि मोमिनीन का व्यक्तिगत अधिकार ही रसूल के आगे समाप्त हो गया तो न उनका सर्वमान्य निर्णय बाक़ी बचा और न बहुमत के मतों का कोई विश्वास बाक़ी रहा। दूसरी जगह अंकित है किः–

''किसी मोमिन व मोमिना को यह अधिकार नहीं है कि अल्लाह और पैगम्बर किसी बात का फैसला कर दें तो फिर वो अपने मामलात में किसी इखतियार (अधिकार) से काम लें।''

याद रखना चाहिए कि परामर्श व्यवस्था (निजामे शूरवी) के लिए जो आयत पेश की जाती है वह है ''वा मिनहुम शूरा बैनहुम''शर्त यह है कि निज़ामे हुकूमत आपसी परामर्श से होना चाहिए।'' इसमें जो अम्र का लफ्ज़ है यही अम्र का शब्द ''मा काना लहुम खैरतुन मिनअमरेहिम'' में भी मौजूद है।

अब अगर वहाँ अम्र शब्द का तात्पर्य वह है जैसे कहते हैं कि मैं एक अम्र (विशय) में आप से परामर्श करना चाहता हूँ तो अर्थ यह है कि अपने मामलात को सलाह मशविरा से तय करना उचित है। यह आदेश प्रति दिन के कार्य कलापों से सम्बन्ध रखता है। इसमें प्रशासनिक व्यवस्था का कोई वर्णन नहीं है। तो हमारी प्रस्तुत आयत में यह अर्थ होगा जैसा कि हमने अनुवाद किया है कि खुदा और रसूल के निर्णय के बाद उन्हें अपने मामलात में किसी फैसले का अधिकार नहीं है। ऐसी दशा में दोनों आयतों से सम्मिलित रूप से यह परिणाम निकलेगा कि शूरा (आपसी परामर्श) उन विषयों में होगा जहाँ खुदा और रसूल का कोई निर्णय उपलब्ध नहीं है।

और अगर उससे प्रशासनिक व्यवस्था का तात्पर्य है तो यहां यह अर्थ होगा कि जब खुदा और रसूल कोई निर्णय कर दें तो उन्हें अपने प्रशासनिक व्यवस्था के विषय में कोई अधिकार नहीं है।

अतः प्रत्येक दशा में खुदा और रसूल की ओर से किसी हाकिम की नियुक्ति के पश्चात न बहुमत का कोई महत्व होगा न आपसी निर्णय या पंच का।

प्रशासनिक व्यवस्था मशवेरती (आपसी परामर्श की) होना चाहिए इसका अर्थ एक तो यह हो सकता है कि शासक को जन साधारण के परामर्श से चुना हुआ होना चाहिए और दूसरा अर्थ यह है कि हाकिम का चुनाव चाहे जिस प्रकार भी हुआ हो वह अपने आदेशों व कार्यों को

सब की सहमति से कार्यान्वित करेगा।

अगर पहली स्थिति हो तो मालूम होना चाहिए कि ''सामान्य शब्दों'' जब इस्लामी हुकूमत गठित हुई तो सर्व प्रथम शासक उसके पैग़म्बरे इस्लाम स० थे क्या किसी मजलिसे शूरा (परामर्शदाताओं की बैठक) द्वारा चयन किए गये थे? ख़ैर मदीने की हिजरत से पहले तो कहा जाता है कि आप जब एक समाज का गठन हो गया था और आप की हैसियत केवल रसूल[स०] की थी किन्तु मदीने में आने के पश्चात स्थिति एक शासक की होने वाली थी तो अगर इस्लाम में शासक के चुनाव में चुनावी प्रणाली होती तो पैग़म्बर खुदा को मुसलमानों की सभा करके इस समस्या को उनके समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए था और तब मुसलमानों को अधिकार होता कि वे शासक आप ही को चुनें या आप को मात्र धर्म गुरू समझें और शासक किसी और को चयनित करें। इस प्रकार वे आपसे धार्मिक समस्यांए पूछते और आप राज्य संचालन में उसके अधीन होते मगर ऐसा नहीं हुआ और हरगिज़ नहीं हुआ। यह स्थिति उस विचार धारा को ग़लत साबित करने के लिए काफ़ी है और अगर दूसरे अर्थ समझे जाएं अर्थात यह कि हाकिम चाहे जिस प्रकार बना हो उसके कार्य हर दशा में मशवरा (सलाह) से ही होना चाहिए तो वास्तविकता यह है कि इस पर कार्यान्वन न पैग़म्बरे खुदा के यहां सिद्ध होता है न उसके बाद जो बहुमत द्वारा शासक नियुक्त हुए उनके यहां ज्ञात होता है। रसूल[स०] ने हुदैबिया की सुलह की जबकि अधिकांश मुसलमान इसके विरूद्ध थे।

खलीफा–ए–अव्वल ने उसामा के लश्कर को भेजने के विषय में परामर्श देने वालों की असहमति पर ध्यान नहीं दिया न मालिक बिन नुवैरा की हत्या होने पर खालिद बिन वलीद के पद चयन करने की राय पर अमल किया। तीसरे ख़लीफा ने अपने नातेदारों को ऊँचे पद देने के विरूद्ध जो आम राय थी उसे नहीं माना। अमीरूलमोनीन हज़रत अली बिन अबीतालिब[अ०] को यह राय दी गयी कि वे मुआविया को अभी हुकूमते शाम में गवर्नर के पद पर बना रहने दें। ज्ञात होता है कि किसी भी दृष्टिकोण के मुसलमान के लिए जिन शासकों का अमल विशवस्त हो सकता है वे उस पर अमल नहीं करते थे कि प्रशासनिक व्यवस्था आपसी परामर्श से होना चाहिए। आश्चर्य यह है कि मौलाना कौसर नियाज़ी साहब को यह भी स्वीकार है किः–

''कुरआन पाक ने ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों में छोटी से छोटी बात में मुसलमानों का मार्गदर्शन किया है और जिस मसअले को तय करना चाहा है उसे फिक्र पर नहीं छोड़ा बल्कि पूरी तरह तय कर दिया और मुसलमान उस तय रास्ते से बाल भर भी हट नहीं सकते।'' परन्तु इस के साथ एक अदद ''लेकिन'' के साथ वो फरमाते हैं किः–

''निज़ामे हुकूमत को तय करने के लिए कुरआन पाक ने सिर्फ और सिर्फ इस हद तक रहनुमाई की है कि निजामें हुकूमत आपसी परामर्श से होना चाहिए। इसके अलावा कुरआन पाक ने कोई स्पष्ट सिद्धान्त तय नहीं किया है।''

अब भला किस बुद्धिमान के स्वीकार करने की यह बात है जिस महान पुस्तक में रोज़ मर्रा की छोटी–छोटी बातों को बिना समझाए नहीं छोड़ा गया हो वो हुकूमत ऐसी सर्वव्यापी प्रभाव रखने वाली चीज़ को बिल्कुल छोड़ दे और उसे दोषपूर्ण मनुष्यों के स्वार्थों के अधीन जान कर और अज्ञानता के अधीन अनजाने में गलत कार्यों के हवाले कर दे।

अगर हुकूमत के बारे में उसने पथ प्रदर्शन नहीं किया है तो उसे यह निर्णय लेना अधिक उचित होगा कि यहाँ दीनी रहनुमा से अलग कोई हुकूमत की कल्पना ही नहीं है अगर धर्म गुरू कार्य वितरण के अधीन किसी को राज्य का व्यवस्थापक बना दें तो प्रशासनिक व्यवस्था में उसे धर्म गुरू से ही मार्गदर्शन लेना होगा न कि उसे अपनी व्यक्तिगत राय से काम करने का

अधिकार होगा और न दुनियावी लोगों के परामर्श से ग़रज़ होगी। हाँ दुनियावी मामलों में स्वंय वह धर्म गुरू जब उचित समझें कुछ लोगों से परामर्श कर लें जिसका तात्पर्य उन लोगों को परिणाम का भागीदार बनाना भी हो सकता है और मन की सन्तुष्टि भी जो कुरआनी इरशाद ''व शाविरहुम फिल अम्र'' से स्पष्ट है किन्तु वह इन मश्विरों पर कार्यान्वन हेतु बाध्य नहीं है बल्कि जब उचित समझें मानें और जब उचित न समझें न मानें ''फइज़ा अज़मता फतवक्कल अलल्लाह'' (जब इरादा कर लिया तो अल्लाह पर भरोसा करो)।

जैसा कि पैग़म्बर खुदा स्वलललल्लाहु अलैहि व आलेहि व सल्लम के अमल के उदाहरणों से सामने आता है, जो तमाम मुसलमानों के लिए सनद है। और ख़ुलफाए सलासा के अमल से भी इसका सुबूत मिलता है जो मुसलमानों की अकसरियत के लिए तो सनद है ही और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ०) के अमल से भी जो दोनों पक्षों के लिए प्रमाण है।

कौसर साहब फरमाते हैं किः—''यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि बाज़ पैग़म्बर बादशाह भी थे और बाज़ पैग़म्बरों ने बादशाह की नियुक्ति भी की।''

किन्तु यहां नियाज़ी साहब इस पहलू को भूल गए कि जो पैग़म्बर बादशाह हुए या जिन्होंने बादशाहों को नियुक्त किया वह क्या सर्वसम्मति अथवा राय मश्वरे से हुआ था।

कुरआन तो क़िस्सए तालूत में साफ बता रहा है कि वह बादशाह भी जो पैग़म्बर की ओर से नियुक्त होता है उसमें किसी परामर्श का दख़ल नहीं होता यहां तक कि क़ौम आपत्ति भी करती है तो उसकी आपत्तियों की परवाह नहीं की जाती है और अल्लाह द्वारा चयनित किये जाने की परवाह नहीं की जाती है और अल्लाह द्वारा चयनित किये जाने का हवाला देकर उसे खामोश कर दिया जाता है।

अतः इससे यह परिणाम निकलता है कि वह बादशाह जिसकी हुकूमत दीनी व इस्लामी कही जा सके वही होती है जो खुदा की तरफ़ से चुना हुआ हो चाहे वह स्वयं नबी या रसूल हो चाहे नबी व रसूल की ओर से नियुक्त किया हुआ शासक हो इसके अलावह जो हुकूमत बनेगी चाहे वह तानाशाही बादशाहों की तरह हो परामर्श से चुना गया हो दुनियावी हुकूमत होगी धार्मिक दृष्टिकोण से उसकी कोई हैसियत नहीं है।



¼s u0 10 dkcfd ‡k-----jl y dhcsVh½

धन्यभाव) करती थीं। कमसिनी में मां की वफ़ात का सदमा (ठेस, खटक) उठाना पड़ा मगर आपने सब्र किया। बाप के पास इज़्ज़तो—मुहब्बत (सम्मान, प्रेम) से रहीं मगर फक्रो—फाके (कठिनाई और भूल) से बसर (व्यतीत) की। कभी मलूल (दुःखी) और दिल तंग (उदास मन) नहीं हुई। हज़रत अली के घर आकर भी वही हालत हुई बल्कि यहां तो सख्त से सख्त काम किये। चक्की पीसी, पानी भरा, मगर कभी उफ़ नहीं की और न हज़रत अली से कभी शिकायत की। रसूल की वफात के बाद बाप की जुदाई का ग़म भी सहा और दुनिया वालों से विभिन्न प्रकार की तक्लीफें (कष्ट) पंहुची मगर आपने सब्र किया। किसी के लिए आपने कभी बद्दुआ (श्राप) नहीं की बल्कि हर मुसीबत पर सब्र और हर हालत में शुक्रे—खुदा (भगवान के प्रति धन्यभाव) करती रहीं।

लड़कियो ! खूब समझ लो कि जनाबे सय्यदा की ज़िन्दगी का खास जौहर (सत्ता) सब्र है।

y Mfd ; ka l sv kf[kjh f[kr kc ¼v fUr e l Ec kspku½

हज़ारों लाखों तारीफ़ खुदा के लिए है जिसके सहारे मैंने अपने मोहतरम (पूज्य) पैग़म्बर की प्यारी बेटी के जीवन—चरित्र जिस प्रकार मुझसे हो सका, लिखकर तुम्हें एक सही इस्लामी ज़िन्दगी अपनाने को रास्ता दिखा दिया जिस पर चलना अल्लाह की मेहरबानी पर निर्भर है।

अगर तुमने इस किताब को ध्यान से पढ़ा और इसे आम किस्से कहानियों की तरह न समझा तो उम्मीद है कि तुम एक आज्ञाकारी बेटी, एक पवित्र बीवी और एक मुहब्बत करने वाली मां बन जाओगी जो स्त्री जाति के जीवन का वास्तविक लक्ष्य है।

¼bekfe; k fe' ku] y [kuÅ i zdk'ku u0a 768½

रसूल स0 की बेटी

¼fdLr %02½

y§kd %eksykuk jtk Mhnnhu gSnj lkgc] lnjs Fkkd ;knxkjs gqlSuh gk;j lsdsaMjh Ldwy bykgkckn

एक बार का ज़िक्र है कि हज़रत अली ने कहा कि उम्मुल हसनैन खाना लाइए। खाना मात्रा में कम था। आपने उत्तर दिया; घर में सिवा इस खाने के जो मैंने बच्चों के खाने से बचाकर आपके लिए रख छोड़ा है (कुछ नहीं है)। इस लिए कि आपके खाने को अपने और बच्चों के खाने से अधिक महत्व देती हूँ। ''यह सुनकर हज़रत अली ने फरमाया कि पहले क्यों नहीं बताया कि घर में खाने को कुछ नहीं है। आपने जवाब दिया कि जब मैं जानती थी कि जो बात सम्भव नहीं है उसको आपसे क्यों कहूँ।

लड़कियो ! इससे यह शिक्षा मिलती है कि शौहर से ऐसी बात न कहनी चाहिए जिसे वह पूरा न कर सके और अपनी मजबूरी के ख्याल से उसको दुख पंहुचे।

बात कड़वी है मगर लिखने योग्य है। वर्तमान युग में जब कि हर तरफ फ़ैशन करने की धुन है और इस पर बहुत पैसा व्यर्थ खर्च किया जाता है और लड़कियां इस बात का बिल्कुल ख्याल नहीं करतीं कि उनके मां बाप बेकारी और बेरोज़गारी से परेशान हैं। वह विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की फरमाइश करती हैं जिससे कभी कभी आपस में मलाल पैदा हो जाता है और शौहर के दिल में उनकी (मान) मर्यादा कम हो जाती है।

नेक और समझदार लड़कियों को सदैव इस बात का ख्याल रखना चाााहिए कि ऐसे हालात में अनुचित फरमाइशों से अपने शौहर को परेशान न करें।

'kekZ g;k ¼yTtk½

औरत का कमाल (पूर्णतया) और उसकी सबसे बड़ी खूबी क्या है? उसकी खूबी शर्मो हया और इस्मत (इज़्ज़त की रक्षा) और पाकदामनी है। जनाबे सय्यदा के शर्मो हया के हालात मानव इतिहास में अद्वितीय हैं। वाकयात से पता चलता है कि बीबी फातमा ने तमाम उम्र हज़रत अली से आंख मिलाकर बात नहीं की बल्कि हमेशा नीची निगाह करके बात चीत करती थीं। कहा करती थी कि एक औरत को किसी दूसरी औरत के शारीरिक अंगो, उसकी बनावट और उसके चेहरे के सौन्दर्य इत्यादि का ज़िक्र अपने शौहर से कभी न करना चाहिए ताकि किसी गैर और न (दूसरी, अजनबी स्त्री) की बातें सुनने के बाद मर्द के दिल में किसी प्रकार का खयाल न पैदा हो सके। एक बार रसूलल्लाह ने अपने सहाबियों (साथियों) को सम्बोधित करके पूछा कि औरत की सबसे बड़ी खूबी क्या है? किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब बीबी फात्मा को इस सवाल के बारे में मालूम हुआ तो आपने कहा कि औरत की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह किसी गैर मर्द को न देखे और न कोई गैर मर्द उसे देखने पाए। इस छोटे से वाकये में बीबी फात्मा ने औरत की खूबी (सद्‌गुण) और शराफ़त (कशिष्टता) की क्या ही अच्छी पहचान बताई है।

एक रोज़ एक अंधे सहाबी रसूल की तलाश में जनाबे सय्यदा के घर पर आए और यह मालूम करके कि रसूलल्लाह घर में हैं खूद भी घर में चले आए। आप उनको आता हुआ देखकर तुरन्त कोठरी में चली गईं। जब वह वापस चले गये और बीबी फात्मा कोठरी से बाहर आई तो हज़रत ने पूठा कि बेटी तुम क्यों छुप गई थीं। कहा कि चादर इतनी छोटी थी कि मैं सर छुपाती तो पैर खुल जाता और पैर छुपाती तो सर खुल जाता। हज़रत रसूल खुदा ने फरमाया कि वह तो नाबीना (अंधे) थे। आपने उत्तर दिया ''बाबा जान ! उनके आंखें न थी मगर मैं तो नाबीना न थी ना महरम को देखती रहती ?

पर्दे का महत्व बीबी फात्मा की निगाह में

क्या था इस वाकये से रोशनी पड़ती है कि पैग़म्बर के इन्तिकाल के बाद एक दिन बड़ी सोच में चुप बैठी हुई थीं कि जनाबे फ़िज़्ज़ा ने जो आपकी दासी थी, पूछा कि ऐ रसूल की बेटी आप क्या सोंच रही हैं। आपने फरमाया कि अरब में मय्यतें इस प्रकार उठाते हैं कि मुर्दे का पूरा शारीरिक ढ़ाचा दिखाई पड़ता है। मुझे फिक्र है कि मेरा जनाज़ा (शव) भी क्या यूं ही उठेगा। फ़िज़्ज़ा ने कहा कि मुल्के हबश (हबश देश) में ताबूत बनाते हैं जिसके अन्दर मय्यत रख देते हैं तो दिखाई नहीं देती। यह कहकर उसका नक्शा बना कर दिखाया जिसे देखते ही आप मुस्कुरा दी और फरमाया खुदा तुम्हारा पर्दा ऐसा ही रक्खे जैसा तुमने मेरे लिए पर्दे का सामान कर दिया।

इन वाकयात से मालूम होता है कि औरत का कमाल उसका पर्दा है और उसकी आबरू शर्मो हया है। काश हमारे यहां की औरतें बीबी फात्मा के बताए हुए रास्ते पर चलने की कोशिश करें।

आज कल के ज़माने में पर्दा तरक्की के रास्ते में एक बड़ी रूकावट समझा जाता है। कहा जाता है कि पर्दे में रहने वाली लड़कियां किसी प्रकार की तरक्की नहीं कर सकतीं कहने वालों से यह पूछना चाहिए कि वह लड़कियों से किस प्रकार की तरक्की की मांग करते हैं। अगर वह चाहते हैं कि वह लड़कियां तहज़ीबो–तरबिअत, अतवारो आदात, इल्मो हुनर (ज्ञान, कला), सलीका मन्दी और किफायत शआरी, (मितव्ययिता) गैरतों खुददारी (स्वाभिमान) और अख्लाको इन्सानियत (चिष्टाचार एवं मानवता) में तरक्की करे तो यह बातें घर की चहारदीवारी में भी हासिल हो सकती हैं अलबत्ता अच्छे माहौल और मुनासिब तालीम की ज़रूरत होगी।

gt jr QkRek dsl; kjscPps

आपके तीन लड़के और दो बेटियां हुई। सबसे पहले इमाम हसन 15 रमज़ान सन् 3 हिजरी को पैदा हुए उनके बाद हज़रत इमाम हुसैन 3 शाबान सन् 4 हिजरी को पैदा हुए। उनके बाद जनाबे जैनब और जनाबे उम्मे कुल्सूम पैदा हुई। इन चार बच्चों के बाद आखिरी बच्चा यानी जनाब मुहसिन मां के पेट ही में पहलू पर चोट लगने की वजह से मर गये थे। यह इतिहास का बड़ा दर्दनाक वाकया है। पहलू पर चोट दरवाज़ा गिराए जाने की वजह से आयी थी।

यह बच्चे जिनका नाम ऊपर आया है मां की खूबियों का पूरा नामूना थे। इनमें से प्रत्येक के जीवन का अध्ययन करने से पता चलता है कि हज़रत फात्मा ने उनकी देखभाल और शिक्षा दीक्षा बड़े पाक और सच्चे उसूलों (सिद्धान्तों) पर की थी जिसका फल यह हुआ कि सब किसी न किसी प्रकार इस्लाम धर्म की उन्नति और सेवा में हमेशा तल्लीन और आगे आगे रहे और सेवा कार्य में अपनी जानें भी अर्पित करके नेकी और सच्चाई का पाठ पढ़ा गये।

लड़कियो ! खूब समझ लो कि बच्चों की प्रारम्भिक तालीम व तरबियत (शिक्षा दीक्षा) मां की गोद ही में प्राप्त होती है और उसी के अनुसर बच्चों का भविष्य बनता है।

cki dk cVhds ifr ize vkS vknj

दुनिया में आज भी बहुत से बाप और बेटियां हैं। लेकिन आज तक न ऐसा बाप हुआ और न ऐसी बेटी हुई। जब सैय्यदा रसूले खुदा की खिदमत में आतीं तो आप उठ कर खड़े हो जाते थे, उनकी पेशानी (माथा) चूमते थे और अपनी जगह पर बेटी को बिठाते थे। हज़रत का यह खास अमल (बर्ताव) बेटी की उन खूबियों की बिना (आधार) पर था जो उनकी जात (निज) के अन्दर पाई जाती थी। वरना आज तक किसी बाप ने बेटी का इस प्रकार आदर नहीं किया है। रसूले खुदा भी जब बेटी के घर आते तो आप भी वैसा ही अमल करती थी। बाप को देखकर फौरन ही ताज़ीम (सत्कार, महिमा) के लिए उठ खड़ी होती।

रसूलल्लाह को अपनी बेटी से अथाह प्रेम था जिसका अन्दाज़ा निम्नलिखित उदाहरण से किया जा सकता है। हज़रत जब किसी जंग के लिए जाते तो सब रिश्तेदारों से मिलने के बाद आखिर में जनाबे सय्यदा से रूख़सत (विदा) होते थे और जब वहां से वापस होते तो सबसे पहले बेटी के पास आते और खैरियत (कुशल मंगल) पूछते। अगर बाप और बेटी की आपसी प्रेम की सारी बातें लिखी जाए तो इस विषय पर एक पूरी किताब लिखी जा सकती है मगर मुझे तो बीबी फात्मा की ज़िन्दगी के और पहलुओं (प्रकरणों, प्रसंगों) पर भी इसी किताब में कुछ रोशनी डालना है।

chch QkRek dk bYe ¼Kku½

पैग़म्बरे–इसलाम का हुक्म है कि इल्म हासिल

करना (ज्ञान प्राप्ति) तमाम (तमाम) मुसलमानों पर वाजिब (अनिवार्य) है। हमें यह देखना है कि रसूले खूदा की इस बेटी ने अपने बाप के इस हुक्म पर कहां तक अमल (पालन) किया। ज़माना वह था कि जब न कोई मदरसा था न स्कूल और न किसी के दिमाग में स्त्री–शिक्षा की बात थी जिससे यह गुमान (अनुमान) किया जा सके कि शायद इल्म की रोशनी इन साधानों से प्राप्त हुई होगी मगर ऐसे उपलब्ध साधन उस समय बिल्कुल नहीं थे। अगर इसे मान भी लिया जाए तो सय्यदा के लिए रसूल की गोद रिसलत के माहौल से बढ़कर कौन सा मदरसा हो सकता था।

बीबी फात्मा की ज़िन्दगी ऐसे वाकयात से भरी पड़ी है जिससे उनके इल्म का कुछ अन्दाजा हो जाता है।

बीबी फात्मा उन धार्मिक व्याख्यानों को जो रसूलल्लाह मस्जिद में दिया करते थे इमाम हसन से घर में बैठ कर और पर्दे में बैठकर सुना करती थी। लड़कियों के लिए इल्म हासिल करने का निःसन्देह यह बेहतरीन तरीका जिसको तालीम (शिक्षा) जनाबे सय्यदा ने दी है। बहुत से ऐसे भी हैं जो मुखतलिफ मौक़ो (अनेक अवसरों) पर खुद आपने इरशाद फरमाये हैं और वे अरबी भाषा के बेहतरीन नमूने हैं। आप कभी–कभी कविता भी कहती थी। आपका एक बहुत दर्दनाक और मशहूर शेर हैं जो आपने अपने बाप के शोक में बहुत दुःख उठाने के बाद कहा।

सुब्बत अलैया मसायबुन लौ अन्नहा।
सुब्बत अलल ऐयामे सिर्र्–न लयालया।।

मुझ पर वह मसीबतें पड़ी कि अगर चमकते हुए दिनों पर पड़तीं तो वह अंधेरी रात हो जाते यानी उनकी रोशनी अंधेरे में बदल जाती।

t ukcsl Ş; nk dh ohjrk

हम एक वाक़ेया नीचे लिखते हैं जिससे मालूम होगा कि सय्यदा को अपने बाप से कितना प्रेम था और यह भी मालूम होगा कि रसूल की बेटी में कितनी जुरअत (साहस) और हिम्मत थी हालांकि आप पर्दे में रहती थीं और घर से कदम बाहर निकालना अच्छा नहीं समझती थीं परन्तु एक अवसर ऐसा पड़ गया कि आपने बहुत दिलेरी (जियालेपन) और बहादुरी से चादर ओढ़कर मैदाने जंग का रूख किया। ओहद की लड़ाई में जब रसूल का एक दांत शहीद हो गया और दुश्मनों ने घेर कर आपको एक गढ़े में गिरा दिया तो उस वक्त शैतान ने आवाज़ लगाई कि मुहम्मद साहब शहीद कर दिए गए। बेटी को कान में जैसे ही बाप की शहादत की यह दिल तोड़ देने वाली आवाज़ पंहुची तो बीबी फात्मा बेचैन हो गई। ओहद का मैदान मदीने की आबादी के करीब था। आप ऐसी परेशान और बेचैन थी कि आपकी चादर का सिरा ज़मीर पर लोटता जाता था। उस वक्त तक हज़रत अली ने जंग करके दुश्मनों को भगा दिया था और रसूले खुदा को संभालने के लिए गढ़े के पास आ गये थे। इतने में बीबी फात्मा भी वहां पंहुच गई और बाप की हालत देखकर रोने लगीं। खुदा के फ़ज़्ल (दया) से जख्म गहरा नहीं था। हज़रत अली जल्दी जल्दी ढाल में पानी भर भर के लाने और लगे और बाप की चहेती बेटी जख्म को धोने लगी।

लड़कियो ! सय्यदा का मैदाने जंग (रणक्षेत्र) की तरफ जाना और दुश्मनों की कसरत (अधिकता) से न डरना हमें बताता है कि उनको अपने बाप से कितनी मुहब्बत थी और यह भी मालूम होता है कि ऐसी मुसीबत के समय पर एक औरत भी निडर होकर मदद के लिए तैयार हो जाती है।

बेशक ऐसे ही वह मौके हुआ करते हैं जब किसी औरत का घर से बाहर निकलना न मज़हब के विरूद्ध है न खिलाफे अक्ल (बुद्धि के विरूद्ध)। अलबत्ता इस आलमे परेशानी (व्याकुलता की दशा) में भी जहां तक हो सके पर्दे का ख्याल रखना ज़रूरी है।

'kkSgj dh brkvr vkSj Qjekajnkjh ¼vkKkikyu½

लड़कियो ! तुम शुरू में पढ़ चुकी होगी कि बाप ने बेटी को विदा करते वक्त नसीहत की थी कि फात्मा तुम अली से कभी किसी चीज़ की फरमाइश न करना, क्योंकि अली के पास माले दुनिया से कुछ नहीं है। बेटी ने बाप की इस ताकीद (आग्रह) पर सदैव अमल किया और उनसे कभी कुछ नहीं मांगा बल्कि उनके घर में तक्लीफ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। शौहर का आज्ञापालन और बच्चों के पालन–पोषण का हमेशा ख्याल रखा। घर के छोटे से छोटे काम में कभी शर्म नहीं महसूस की। झाड़ू देना, बर्तन धोना, खाना पकाना, पानी भरना और चक्की पीसना प्रतिदिन के काम थे। एक बार बीमारी की हालत में आप चक्की पीस रही थीं। जब हज़रत अली ने देखा तो फरमाया

कि इस हालत में यह सख्त मशक्कत (परिश्रम) क्यों उठा रही हैं? आपने जवाब दिया कि आपकी इताअत (आज्ञापालन) और खुशी के लिए।

घरेलू काम–काज के सिलसिले में एक वाक़ेया और भी मिलता है। एक दिन रसूले खुदा ने देखा कि उनकी बेटी ऊँट के ऊन की एक चादर ओढ़े चक्की चला रही हैं और बच्चे को दूध भी पिला रही हैं, यह हालत देखकर आपके आंसू निकल आए और फरमाया ऐ मेरी प्यारी बेटी ! दुनिया की तल्खी (कड़वाहट) को हंसी खुशी बरदाश्त कर लो ताकि आखिरत की शीरीनी (मिठास) तुमको हासिल हो। बीबी फात्मा ने जवाब दिया कि ऐ बाबा खुदावन्द तआला (परमेश्वर) की नेमतों का हज़ार हज़ार शुक्र है उसकी हर नेमत पर उसकी तारीफ लाजिम (आवश्यक) है।

इस प्रकार की दुख भरी ज़िन्दगी के बावजूद अपने शौहर से बहुत प्रेम करती थीं। आपके जब देहान्त का वक्त आया तो बहुत बेचैन होकर रोने लगीं। हज़रत ने पूछा आपके इस समय रोने का क्या कारण है। जवाब दिया कि मेरा रोना उन मुसीबतों पर है जो मेरे बाद आप पर पड़ेंगी।

लड़कियो ! तुमने अक्सर घरों में जहां गरीबी के कारण तक्लीफ़ रहती है तो अपने शौहरों से गड़ती हैं और कभी–कभी अपने को कोसती और खुदा की शान में अपशब्द निकालती हैं। यह बेसब्री बीबी फात्मा की सीरत (चरित्र) के खिलाफ है।

cki dhoQkr ¼LoxZokl½ij cSVhdhgkyr

जब जनाबे रसूले–खुदा बीमार हुए तो बीबी फात्मा बहुत परेशान हुई। उन दिनों हज़रत रसूल किसी बीबी के यहां थे। आप घर का सब काम जल्दी जल्दी खत्म करके बाप की खिदमत (सेवा) में चली जाती और तीमारदारी (रोगी सत्कार) में लग जाती। जब मरज (रोग) में कमी होती तो सय्यदा का चेहरा खुशी से बहाल हो जाता और जब बीमारी बढ़ जाती तो आप भी बेचैन और व्यकुल हो जाती। रफ्ता–रफ्ता मरज बढ़ता गया तो सय्यदा ने घर जाना भी छोड़ दिया और आठों पहर बाप के पास रहने लगीं। रसूल का जब आखिरी वक्त हुआ तो आपने बेटी को सीने से लगाया और सब्र करने की वसीअत की। बाप के इन्तेक़ाल के बाद सय्यदा का बुरा हाल हो गया। गम का एक पहाड़ था जो टूट पड़ा। आप दिन रात रोया करती थीं। सात दिन तक घर से बाहर नहीं निकलीं। आठवें दिन कब्र पैग़म्बर पर आई। रोने–पीटने के बाद गश खाकर गिर पड़ी। मदीने की औरतों ने संभाला और मुंह पर पानी छिड़क कर होश में लाईं तो आपने जोर–जोर से रोकर अपने बाप से फरियाद कीः–

''ऐ बाबा ! आपके बाद तनहाई में मेरा कोई मूनिसो मददगार नहीं। आपकी जुदाई (विरह) में मेरी आंखों से आंसू नहीं रूकते। दुनिया मेरी निगाहों में अंधेरी हो गई। आप का गम हर लमहा (मल) मुझे बेचैन रखता है। ऐ खुदा ! मुझको बहुत जल्द उठा ले कि मैं दूनिया से बहुत सेर हो गयी हूँ। इसके बाद चीख़–चीख़ कर रोना शुरू किया और यह हालत हुई कि मालूम होता था रूह बदन से निकल जायेगी। बीबी फात्मा के मुसलसल दिल हिला देने वाले बैन से घबरा कर मुहल्ले वालों ने हज़रत अली से कहा कि हम अपना काम काज नहीं कर सकते हमारी तरफ से रसूल की बेटी से कह दीजिए कि वह दिन को रोया करें या रात को ताकि हम लोग किसी वक्त अपना काम भी कर सकें। बीबी फात्मा ने सुनकर जवाब दिया कि आप उन लोगों से कह दीजिए कि फात्मा अब बहुत कम दिन ज़िन्दा रहेगी मगर यह मुमकिन नहीं कि जीते जी बाप को न रोये। हज़रत अली ने मुहल्ले वालों के ख्याल से जन्नतुल बकी में एक कोठरी बनवा दीजहां बीबी फात्मा बच्चों के साथ सुबह को चली जाती थीं और वहां बैठकर दिन भर रोया करती थीं। रात को हज़रत अली जाकर उन्हें घर ले आया करते।

बाप की जुदाई का इतना असर था कि एक बार अज़ान में अशहदो–अन्ना–मुहम्मदुर्रसूल्लाह–सुन लिया तो बाप का ज़माना याद आ गया और रसूल्लाह की तस्वीर आंखों में फिरने लगी। दिल उमड़ आया। आंखों से आंसू बहने लगे और फिर बेहोश हो गई।

आं हज़रत के इन्तेक़ाल के बाद बीबी सय्यदा वाकई बहुत कम दिन जीवित रहीं यानी सिर्फ 75 रोज़। बाप के बाद बेटी भी ग़म में घुल–खुल कर जन्नत को सिधार गईं।

'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन'

(हम सब अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर पलट जाएंगे।)

tukcs ,;nk dhoQkr

(3 जमादियुस्सानी सन् 11 हिजरी)

लड़कियो ! यहां तक तो तुमने अपनी बीबी की ज़िन्दगी के हालात पढे हैं जिससे अच्छी–अच्छी नसीहतें मिलती हैं मगर अब वह अवसर आता है कि तुमसे पढ़ा न जाएगा। जिस तरह उनकी ज़िन्दगी के हालात दुनिया की और दूसरी औरतों से बिल्कुल अलग दिखाई देते हैं उसी तरह उनकी वफ़ात के हालात भी दुनिया से जुदा है।

सय्यदा बीमार हुईं और गमों से इस दर्जा निढ़ाल हुई की मरज बढ़ता ही गया। उसी आलम में वह खुदा से निम्नलिखित शब्दों में प्रार्थना करती थीं:–

''या हैय्यो या कैय्यूम बिरह्मतिक अस्–तग़ीसो फ़–अग़िस्नी अल्लाहुम्म ज़हज़नी अनिन्नार व अद्ख़िल्निल जन्ना व अल्हिक़नी बि अबी मुहम्मदिन् व आलेही।''

(ऐ जिन्दा, ऐ कायम (टिकने वाले) ! मैं तेरी रहमत (दया) की मदद चाहती हूँ। तू मेरी मदद फ़रमा। ऐ खुदा तू मुझे आग से दूर रख और मुझको जन्नत में दाखिल (प्रवेश) फ़रमा और मुझको मेरे बाप मुहम्मद और उनकी आल औलाद (सन्तान) से मिला दे।)

जब बीबी फात्मा के इन्तक़ाल का दिन आया तो आपने उस दिन कई कई काम एक साथ करना शुरू कर दिये। आटा भी गूँघ कर रख दिया। सर धोने के लिए मिट्टी भी भिगो दी और हसनैन के कपड़े भी धोने लगीं। हज़रत अली ने यह देखकर फ़रमाया कि ऐ रसूल की बेटी आज क्या बात है कि एक ही वक्त में दुनिया के कई कामों में मशगूल (कार्यरत) हैं हालांकि पहले ऐसा न करती थीं। आपने जवाब दिया ऐ अबुल हसन आज मेरा रोज़े वफात (स्वर्गवास का दिन) है मैंने चाहा कि बच्चों को सर धुलाकर नहला दूँ , रोटियां भी पकाकर खिला दूँ और उनके कपड़े भी साफ कर दूँ। इसलिए कि आप तो मेरे ग़म में मुब्तिला (लीन) रहेंगे मेरे बच्चों का खबर कौन लेगा। यह सुनकर हज़रत अली बेचैन हो गये और आंखों में आंसू भरे हुए नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ चले गए। बीबी सय्यदा ने बच्चों का हाथ पकड़ा और कब्रे रसूल से विदा हुईं। फिर बच्चों को सीने से लगाया, प्यार किया और कहा कि तुम दोनों थोड़ी देर के लिए मस्जिद में जाकर अपने बाप के पास बैठो। खूद घर वापस आई और अस्मा को बुला कर कहा कि तुम आज घर से न जाना। मैं कोठरी में जाकर इबादते खुदा में मशगूल होती हूँ। कुछ देर के बाद तुम तीन मरतबा आवाज़ देना अगर जवाब न मिले तो अन्दर चली आना और समझ लेना कि मैं अपने बाप के पास पंहुच गई। यह फरमा कर दो रकअत नमाज़ पढ़ी और दुआओं में मसरूफ़ (व्यस्त) हो गई। कुछ देर बाद जब अस्मा ने आवाज़ दी और कोई जवाब न मिला तो समझ गई कि बीबी ने इन्तेक़ाल फरमाया। इतनी ही देर में हसनैन भी आ गये और अपनी मां को पूछने लगे। अस्मा खामोश हैं, क्या जवाब दें। चेहरे पर रंजोमलाल (दुःख) के असार (लक्षण) हैं। घबराकर दोनों बच्चे कोठरी में दाखिल हुए और देखा कि उनकी प्यारी मां का इन्तेक़ाल हो गया है। रोते हुए मस्जिद की तरफ दौड़े और हज़रत अली को इस दिल हिला देने वाली घटना की सूचना दी। हज़रत अली यह ख़बर पाते ही बेचैन हो गये। सर से अमामा (पगड़ी) उतार दिया और घर में आए। बे इन्तेहा दूःख और शोक के साथ मय्यत को गुस्ल देने और कफनाने में मशगूल हुए। हज़रत अलीने बीबी फात्मा की वसीअत के अनुसार रात में उनका जनाज़ा उठाया और जन्नतुलबक़ी में दफ़न कर दियाजन्नतुलबक़ी एक पुराना कब्रस्तान है जिसमें कई इमामों की कब्रें मौजूद हैं और जिनपर कुब्बे बने हुए थे मगर हाय अफ्सोस नज्द के बादशाह इब्ने सऊद ने बड़ा ग़ज़ब किया। सबकी कब्रें खुदवा दीं, कुब्बे गिरवा दिए और जन्नत की शाहज़ादी फात्मा का रौज़ा भी खोद कर ज़मीन के बराबर कर दिया और आज सिर्फ चिन्ह के तौर पर पत्थरों के कुछ टुकड़े रखे हुए हैं। खुदा इस जुल्म का जल्द बदला ले जो आठ शौव्वाल 1346 हिजरी को हुआ।

लड़कियो ! तुम्हें अपनी शाहज़ादी की याद ताज़ा रखने के लिए उनके हालात ब्यान करना और उनकी मुसीबतों पर आंसू बहाना चाहिए।

lcZgt j+r QkRek dh [kkl 'kku

लड़कियो ! तुमने पैदाइश से लेकर वफ़ात तक के मुख्तसर हालत (संक्षिप्त उल्लेख) पढ़ लिए। क्या तुम बता सकती हो कि हज़रत फात्मा की ज़िन्दगी का सबसे रौशन पहलू कौन सा है? अगर तुम ज़रा सा गौर करेगी तो मालूम हो जएगा कि वह ''सब्र'' है। हज़रत फात्मा हर हाल में सब्रो शुक्र (सहिष्णुता और

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

lEikndu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

¼fd'r %18½

r'kgqn

दूसरी रकअत के दूसरे सजदे के बाद बैठ कर तशह्हुद पढ़ना चाहिए। नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसका कुबूल और उसका सही होना उसूल (मानने की बातों) के सही होने पर निर्भर है इसलिए कर्म को ईमान/विश्वास की बुनियाद पर होना चाहिए और ईमान को शुरू से आख़िर तक बाक़ी रहना चाहिए अगर खुदा न करे बीच नमाज़ में किसी के मन में खुदा की तौहीद (एक होना) या रसूलल्लाह (स0) के रसूल होने के ख़िलाफ़ विश्वास पैदा हो जाए तो वह नमाज़ बिल्कुल बेकार हो जाएगी। नमाज़ के पहले इन विश्वासों का ख़्याल और एहसास, और एलान और ज़ाहिर होना अज़ान व एक़ामत में हो जाता है। उसके बाद नमाज़ के आख़िर में और अगर चार रकती नमाज़ है तो बीच में (तशह्हुद की हालत में) भी फिर वह ईमान ज़ाहिर हो जाता है जिससे मालूम होता है कि शुरू से आख़िर तक कर्म, ईमान और अक़ीदे/विश्वास के तहत है। वह कहता है: *"अश–हदु अल् ला इला–ह इल्लल्लाहु वह–दहु ला शरी–क–लहु व अश्–हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहु व रसूलुह अल्ला हुम्म स्वल्लि अ़ला मुहम्–म–दिव् व आलि मुहम्मद"*

"मैं गवाही देता हूँ कि नहीं है कोई खुदा सिवाए अल्लाह के, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नही और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) उसके ख़ास बन्दे और उसके रसूल/भेजे हुए दूत हैं।" यह बात ख़ास ध्यान देने वाली है कि रसूल स0 के लिए खुदा का बन्दा होने का ऊँचा दरजा है जिसे रसूल[अ0] होने से आगे रखा गया है इसलिए उसका बन्दा होने की गवाही रसूल होने से पहले होती है। दोनों गवाहियों के बाद खुदा से रसूल (स0) के लिए ख़ास रहमत की दुआ की जाती है और कहा जाता है "ऐ खुदा! अपनी रहमत भेज मुहम्मद (स0) और मुहम्मद की आल (सन्तान/औलाद) (स0) पर" इससे अपने दीन के रहबरों के साथ अपने अक़ीदे के खुलूस भरी श्रद्धा (मन से लगाव) ज़ाहिर होती है।

vkf[kjh nks jdrsa

अगर सुबह की नमाज़ है तो वह दो ही रकत पर ख़त्म हो जायेगी लेकिन अगर मग़रिब की नमाज़ है तो एक रकत और, अगर जुहर, अस्र, या इशा की नमाज़ है तो दो रकते इसके बाद और पढ़ी जायगी। इन रकतों में चाहे सूरह हम्द पढ़े या तसबीहाते अरबअ यानी *"सुब्हानल्लाहि, वल्–हम्दुलिल्लाहि, व–ला–इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर।"*

इन तसबीहाते अरबआ (चार तस्बीहें/खुदा की पाकी/पवित्र होना) की बड़ाई का बस इससे अन्दाज़ा कर सकते हैं कि इन दोनों रकतों में वह सूरा हम्द की जगह पढ़ी जा रही है।

इसका नाम तस्बीहात है मगर असल में उनमें सिर्फ़ तसबीह नहीं है इनमे तस्बीह भी है और खुदा की हम्द/संस्तुति और तौहीद (एक होना) भी है और फिर तकबीर (खुदा का बड़ा होना)। और चूँकि आदमी अल्लाह की बड़ाई और उसके असल गुणों (खासियतों) की मारेफ़त (पहचान) नहीं सकता है मगर इस तरह की कमियों और पैदा होने वाले के गुणों को उससे अलग समझें। इसलिए तसबिह को पहले रखा गया है। और दूसरी चीज़ों को बाद में।

हदीसों में फ़र्क़ की वजह से इस बात में फ़र्क़ हो गया है कि ये तसबीहात एक मर्तबा पढ़ी जायें या तीन मरतबा, लेकिन तीन मरतबा पढ़ने के सही होने में कोई शक नहीं और इसी पर चला जा रहा है।

bcknr dsfgLlkaesajaxkjaxh

जो बात बराबर एक ही तरह पर होती रहे और एक हालत पर रहे उसका लगाव दिमाग़ से टूट जाया करता है और नयापन या रंगा रंगी न होने की वजह से ज़ेहन को तवज्जो रखने की ज़रूरत नहीं होती लेकिन अगर काम में रंगा रंगी और नयापन (भिन्नता) हो और हर जगह (Step) के लेहाज़ से कोई ख़ासियत रख दी गई हो तो इन्सान का ध्यान नया होता रहता है और उसे ध्यान का लगाना ज़रूरी होता है इस वजह से नमाज़ की क़िस्मों और उनके हिस्सों में रंगारंगी रखी गयी है, ये टॉपिक बहुत बड़ा है, इसमें नमाज़ की क़िस्में भी शामिल होती हैं। मसलन नमाज़े आयात का एक ख़ास रंगढंग, नमाज़े ईद की एक ख़ास कैफ़ियत (तरीक़ा), नमाज़ जुमा का अलग अन्दाज़ और रोज़ाना की नमाज़ का एक ख़ास तरीक़ा अगर सब नमाज़ें एक ही तरह होतीं तो इस बात की ज़रूरत नहीं थी कि नमाज़ पढ़ते वक़्त ये ख़्याल भी पैदा हो कि ये कौन सी नमाज़ है। लेकिन तरीक़ा अलग–अलग है इसलिए ज़रूरी हो गया कि नमाज़ के वक़्त आदमी का ध्यान रखे कि वह इनमें से कौन सी नमाज़ पढ़ रहा है, फिर रोज़ाना की नमाज़ में सुबह की नमाज़ दो रकत, ज़ुह्र व अस्र की चार रकत मग़रिब की तीन रकत और फिर इशा की चार रकत, अगर सब एक ही तरह की होती तो हो सकता था कि पढ़ते वक़्त ये ख़ास एहसास पैदा न होता कि ये सुबह की है या ज़ुहर की है या अस्र या मग़रिब की है या इशा। लेकिन अब तो इस ख़ास बात की तरफ़ ध्यान से कोई चूक नहीं सकता ज़ुहर, अस्र में और फिर मग़रिब इशा में आगे पीछे होने का ज़रूरी रखना भी इस ध्यान के बाक़ी रखने का बड़ा जिम्मेदार है। फिर इनकी रकत अलग अलग, पहली और दूसरी रकत में सूरे हम्द के बाद कोई दूसरा सूरा पढ़ा जायेगा लेकिन बाद की दो रकतों में दूसरा सूरा न पढ़े सिर्फ़ सूरह हम्द पढ़े या फिर सूरह हम्द के बजाय चाहे तसबीहात अरबा के पढ़ने की बात है। इस से तो ज़रूर इन्सान के मन को ज़ोर देना पड़ेगा कि मुझे यहाँ क्या पढ़ना चाहिये। इस मक़सद को पाने के लिए मैं तो इस बात को बहुत पसन्द करता हूँ कि इन्सान इनमें से किसी एक का आदी न बनें बल्कि शरीयत ने Option दिया है कि (तीसरी और चौथी रकअत में) वह कभी सूरे हम्द पढ़ा करें, और कभी तसबीहाते अरबआ *(सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि वलाइला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहुअक्बर)* क्यों कि ऐसे में तवज्जो ज़रूर पैदा करनी पड़ेगी। लेकिन अगर वह सूरहे हम्द ही का आदी हो तो तब भी मेरे ख़्याल में तवज्जा पैदा करना इसलिये ज़रूरी होगा कि कहीं वह इसके बाद दूसरा सूरा न पढ़ने लगे।

फिर क़याम, (खड़े होना) रूकू, सजदे, और बैठने की हालत का फ़र्क़ यहाँ तक कि रुकू और सजदे हर एक में जो ज़िक्र (पढ़ना) है उसमें कुल बोल के एक जैसे (Same) होने के साथ फिर भी *"अल अज़ीमि"* और *"अल्–आला"* का फ़र्क़ रख दिया गया है। पहले सजदे से सर उठाकर बैठने में *"अस्तग़फ़िरूल्ला–ह रब्बी व–अतूबुइलैह।"* और दूसरे सजदे से सर उठाने के बाद अगर पहली रकत हो तो खड़े होते हुये *" बि–हौलिल्लाहि व क़ूवतिही व अक़ूमु व अक़्उद।"*

"अल्लाह ही की क़ूव्वत और ताक़त से खड़ा होता हूँ" और अगर दूसरी रकत हो तो बैठ कर तशह्हुद पढ़े । चार रकत वाली नमाज़ में तीसरी और चौथी रकत में यही फ़र्क़, मतलब ये है कि किसी हद तक एक जैसा और किसी हद तक फ़र्क़, हर जगह बाक़ी रखा गया है जिसकी वजह से अगर ज़ेहन थोड़ी देर तक हाज़िर न भी रहे तो फिर उसे वापस आना पड़ता है और इन्सान को अपने मन में एक नयापन लाना ज़रूरी होता है।

uekt +dkvkf[kjh: Du (Step) ;kuh lykke

आख़िरी रकत में तशह्हुद के बाद सलाम फ़ेरने का हुक्म है। और दुरूद (सलवात) के बोल आपको मालूम हैं। *"अल्लाहुम्–म सल्लि अला मुहम्मदिवँ व आलि मुहम्मद।'*

इससे क़ुर्आन के उस हुक्म पर चलना होता है जिसमें कहा गया है कि *"इन्नल्ला–ह व मलाइ–क–तहू युसल्लू–न अलन्नबी या ऐयुहल्लज़ी–न आ–मनू सल्लू अलैहि व सल्–लमू तस्लीमा"* मगर इसमें सलवात के साथ सलाम का भी हुक्म है इसलिये नमाज़ के ख़त्म होने के वक़्त जब दुरूद (सलवात) पढ़ लिया जाये तो कहा जाता है।

"अस्सलामु अलै–क ऐयुहन नबीयु व रह्–मतुल्लाहि व ब–रा–कातुह।"

"आप पर अल्लाह की सलामती हो ऐ ख़ुदा के रसूल

(स0) और उसकी रहमत हो और ख़ास बरकतें।''

अब आयत के हुक्म की पूरी तरह पैरवी (चलना) हो गयी रसूल (स0) पर सलाम करने के बाद जैसे इनके वास्ते से अपने मुसल्मान भाइयों के लिए सलामती के लिए दुआ करता है और कहता है, *''अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।''*

''सलाम हो हम सब पर और सब ख़ुदा के नेक बन्दों पर और फिर *''अस्सलामु अलैकुम् व रह्–मतुल्लाहि व ब–रा–कातुह।''*

''सलाम हो तुम पर और अल्लाह की रहमत और बरकतें।''

एक रवायत में है कि किसी ने अमीरुलमोमेनीन (अ0) से पूछा ''इमामे जमाअत के पेश इमाम का *''अस्सलामु अलैकुम''* कहने का क्या मतलब है''?

हज़रत (अ0) ने फ़रमाया ''यानी इमाम ख़ुदा की तरफ़ से कहता है और जैसे जमाअत की नमाज़ में हाज़िर होने वालों को ख़ुशख़बरी देता है कि तुम्हें क़यामत के दिन ख़ुदा के अज़ाब से सलामती और अमान है।

इसका नतिजा ये होता है कि *''अस्सलामु अलैकुम''* ये दुआ का बोल नहीं है बल्कि ख़बर का बोल है जो ख़ुदा की तरफ़ से जमाअत में हाज़िर लोगों के लिये एक ख़ुशख़बरी की हैसियत रखता है।

फ़ज़्ल बिन शाज़ान की रवायत है जो इमामे रिज़ा (अ0) से है, इसमें है कि हज़रत ने फ़रमाया '' सलाम को नमाज़ के ख़त्म होने का ज़रिया रखा गया है और इसके बजाये तकबीर या तसबीह या कोई और क़िस्म की चीज़ इस लिये नहीं रखी गई है कि नमाज़ के शुरू हो जाने पर ख़ुदा की मख़लूक से बात करना नाजाएज़ हो जाता है और सिर्फ़ सिरजनहार (ख़ुदा) की तरफ़ तवज्जो हो जाती है। इसलिए नमाज़ उन से बात करने पर ख़त्म होती है और ख़ुदा के बन्दे के साथ बात चीत सलाम ही से शुरू होती है।

इमाम (अ0) के कहने की रोशनी में मै ये कह सकता हूँ कि जिस तरह आप कहीं से आते है और किसी गुट/समूह से (Group) में मिलते है तो सलाम करते हैं, इसी तरह सो कर उठते है तो सलाम करते हैं, इस बुनियाद पर कि सो जाने पर भी दुनिया की मौजूदा भीड़ से अलगाव, दूरी की हालत होती है। इसी तरह नमाज़ शुरू करके आप आस पास के लोगों से दूर हो जाते हैं और आप एक दूसरी दुनियाँ में पहुँच जाते हैं जिसे बारगाहे कुद्स समझा जा सकता है। अब जिस वक़्त आप उस बड़ी दुनिया से फिर अपनी दुनिया में वापस आते हैं यानी नमाज़ ख़त्म करते हैं तो नये सिरे से आपसे और पास बैठने वालों से मुलाक़ात का मौक़ा आता है इसलिये सबसे पहले आप सलाम करते है। *''अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व ब–रा–कातुह।''* ''अब इस रौशनी में थोड़ा सा आप आगे निगाह डाल लीजीये, देखिए तो नमाज़ में एक उठान (Uplift) नज़र आती है और एक पलटना (Return) और इन दोनों में एक तरतीब की शान पाई जाती है। जिस वक़्त बन्दे ने नमाज़ शुरू की और ख़ुदा की तारीफ़ के जीनों पर चढ़ना शुरू किया उस वक़्त एक ग़ैबत (पर्दे) का अन्दाज़ था, जैसे वह अभी ख़ुदा के दरबार से अलग और कुदरत के जलाल से ओझल होकर कह रहा था *''अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर्रहमानिर्रहीम, मालिके यौमिद्दीन''* लेकिन ज्यो–ज्यों ख़ुदा की तारीफ़ की मंज़िलों को तय करता गया, पर्दा हटता गया, यहां तक की वह अपने जलाले अहदियत ख़ुदा के तेज को अपनी निगाहों के सामने पाकर ज़रूरत वालों की तरह कहने लगा *''इय्या क नाबुदु व ईया क नस्तईन ''*। ये था उस उठान का सफ़र जहाँ वह ग़ैबत (गायब की मन्ज़िल) से हुज़ूर (हाजिर की मन्ज़िल) तक पहुँचा।

अब ख़ुदा के दरबार में बात और दरख़्वास्त के बाद वह पिछले पैरों वापस आने लगा तो वही रूक–रूक कर चाल इस वापसी में भी है। ये कितनी बुरी बात होती कि अगर वह ख़ुदा से बातें करते–करते एक ही बारी मुंह फेर लेता और अचानक ही इन्सानों से बाते शुरू कर देता। इसलिये वह चुपके चुपके कदम पीछे हटा रहा है। उसने चलते चलाते अपने विश्वास को ज़ाहिर किया और कहा– *''अशहदो अन ला इलाहा इल्लाहु व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह ''*

इस गवाही को देने के साथ ही उसको रसूल की सेवाएं याद आयी और दुनिया की हिदायत में आप (स0) के अनथक जतन का ख़्याल आया तो उनकी ख़िदमतों को कुबूल करने और एहसान मानने

और शुक्रिए के तौर पर उसने खुदा से आपके लिये दुरूद (सलवात) की दरख़्वास्त की *"अल्ला हुम्–म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन व अ़ला आले मुहम्मद "*

अब वह ख़ास ख़ुदा के ख़्याल से ज़रा नीचे उतर कर रिसालत की सतह पर पहुंच चुका था जैसे दरबार से रुख़सती के सिलसिले में खुदा के अर्श से पलट कर नबूव्वत की कुर्सी के पास आ गया था, तो उसने रसूल स0 की तरफ़ रुख़ करके खुलूस के साथ आपकी वारगाह में सलाम पेश किया *"अस्सलामु अलै–क ऐयुहन् नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब–र–कातुह।"*

मालूम होता है कि जैसे अल्लाह के तेज के सदन में रसूल स0 के सम्मान की कुर्सी है जिन्हें अदब के साथ सलाम करता हुआ बाहर आ रहा है। अब यहाँ से हटा और डयोढ़ी के पास आया, तो बन्दों और अपने बराबर वालों का झुरमुट नज़र आया तो कहने लगा *"अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व ब–र–कातुह।"*

आम तौर पर ये दोनो सलाम कहे जाते हैं मगर इनमें वाजिब एक ही है। मैं इनकी बनावट की वजह से ये समझता हूं और कुछ हदीसों से भी ये बात साबित होती है कि पहला सलाम *" अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।'* सारे मुसलमानों के लेहाज़ से है जो तसव्वुर की दुनिया में उस वक़्त उसके सामने होते हैं चाहे नमाज़े जमाअत हो या फ़रादा (अकेले की नमाज़)। इसलिये सलाम की हालत छिपी हुई हैसयत रखती है और दूसरा सलाम *"अस्सलामों अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बराकातोह।"* जमाअत की नमाज़ के लिये है, इमाम की ज़बान से उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले लोगों के लिये है। इसलिये उसमें उन्हें बुलाने का अन्दाज़ है।

ये है इस्लाम की 'नमाज़' जो ख़ुदा के भक्त होने को ज़ाहिर करने के साथ–साथ उसके बन्दों के साथ भी शिष्टाचार अच्छे तरीक़े और अच्छे मेल–जोल को सिखाने वाली है। कहीं मुसलमान इस ख़ूबसूरत इबादत को सच्चाई की पहचान के साथ पूरा करें और इसको सिर्फ़ एक रस्मी बात समझ कर भुलावे, बेसुधी और रवा–रवी के कोहरे में न छिपा दें।



¼tkjh--------------------½



egrjekrut hke tgjkud ehh 'duht +vdcjijwh*

कौन ला सकता है अहमद की क़यादत का जवाब
दो जहां में है कहां उनकी क़यादत का जवाब

दुश्मनों के साथ भी हर वक़्त है हुस्ने सुलूक
है यक़ीनन ग़ैर मुम्किन इस शराफ़त का जवाब

क़ौले ज़र्रीं पर फ़िदा होने लगे हैं जानो दिल
कौन देगा इस फ़साहत इस बलाग़त का जवाब

आसमां तक सरनिगूं है देखकर रिफ़अत तेरी
ख़ल्क़ में मुम्किन नहीं तेरी जलालत का जवाब

संगे दिल क्या पत्थरों ने पढ़ लिया कल्मा तेरा
बस में दुनिया के नहीं तेरी हुकूमत का जवाब

सारी दुनिया की निगाहें आप पर मरकूज़ हैं
क्या कभी मुम्किन नहीं है ऐसी सूरत का जवाब

दे गये हैं दौलते कुरआनो इतरत मुस्तफ़ा[स0]
दोनों आलम में नहीं है ऐसी दौलत का जवाब

ऐ कनीज़े सादिक़े आले नबी यसरिब को चल
खुल्द में रहना भी कब है इस सुकूनत का जवाब





^uny fgUnh*

बरबरीयत होती है मेहरो वफ़ा के नाम पर
छिन गयी तहज़ीब तक अद्लो अता के नाम पर
टुकड़ टुकड़े हो रहीं हैं मुत्तहिद नस्लें तमाम
तफ़रिक़ा मेराज पर है एकता के नाम पर



मुख्य समाचार

bjZkd+ esa ,d gh fnu esa 50 yksxksa dh ekSr

ईराक में एक ही दिन में 50 से ज्यादा लोग मौत की नींद सो चुके हैं। अधिकांश मौत बग़दाद के आसपास और सुन्नी क्षेत्रों में हुयी हैं। जिन इलाकों में हिंसक कार्यवायी का सिलसिला तेज़ रहा उन में सुन्नी इलाके दयाला,नैनवा,और सूबा सलाहुद्दीन विशेष तौर से शामिल हैं। करकूक शहर में भी हिंसक घटनांए सामने आयीं हैं। शुक्रवार के दिन सबसे पहले 18 लोगों की लाशें मिलने से रक्तपात का आरम्भ हुआ। ये लाशें बगदाद से कुछ ही दूरी पर उत्तर की ओर से मिलीं। हत्या के बाद फेंक दी गयी इन लाशों में दो कबाइली सरदारों एक फौजी मेजर चार पुलिसकर्मी समेत आम लागों की लाशें थीं। सभी लाशों को सुन्नी कस्बे तारमिया के खेतों में दबा दिया गया। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार मारे गये उन सभी लोगों के सरों और सीनों में गोलियां मारी गयी थी। इराक में हत्या की बढ़ती हुई घटनाओं के कुछ दिन ही बाद यह घटना सामने आयी है, जब बगदाद में अन्य स्थानों से 19 लाशें मिली थीं। उन में से आठ की आंखों पर पट्टियां बंधी हुयी थीं जबकि 6 लाशें एक नहर से मिली थीं। पिछले एक सप्ताह के दौरान सामूहिक रूप से पूरे इराक में 200 लोगों की मौत हुयी है जबकि एक साल में मारे जाने वालों की संख्या 6000 है।

जौहरी प्लान्ट लाल रेखा हैं, संवर्धन जारी रहेगा: हसन रूहानी

ईरान ने दो टोक में अपने एटमी प्लान्ट को किसी कीमत पर तबाह न करने की घोषणा करते हुये उसे अपनी लाल रेखा ठहराया है। ईरान के राष्ट्रपति ने इस बात का इज़हार फिनानशियल टाइमज़ को दिये गये एक इंटरव्यूय में किया है। दूसरी तरफ इसराईल और अमरीका के रूढ़िवादि कांग्रेसी सदस्यों, की ज़िद है कि ईरान अपना जौहरी प्रोग्राम रोक दे। ईरान के राष्ट्रपति डा० हसन रूहानी ने यह दो टूक अधिष्ठान ऐसे अवसर पर अपनाया है जब अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों के साथ उसके जौहरी प्रोग्राम पर जेनेवा में समझौते को एक सप्ताह हुआ है। इसराईल के इस समझौते को अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों की तारीखी गलती कह रहा है और अमरीका के कानून निर्माताओं ने भी ईरान से इस समझौते पर पैरवी कराने के लिए उसे पाबन्दियों के दबाव में रखने पर जोर दिया है। फिनानशियल टाइमज़ ने इरानी राष्ट्रपति जनाब हसन रूहानी से पूछा क्या ईरान अपने जौहरी प्लांट को खत्म करेगा? ईरानी राष्ट्रपति का इस बारे में जवाब था ''ईरान यूरेनियम के संवर्धन को अपनी ईंधान की आवश्यकता तक जारी रखेगा, यह सौ फीसद हमारी लाल रेखा है।

अमरीका के साथ भविष्य में अपने सम्बन्धों के प्रश्न पर कहा ''हम इस चरण पर तनाव में कमी चाहते हैं और बतदरीज आपसी विश्वास का माहौल पैदा करना चाहते हैं पिछले 35 सालों के दौरान उत्पन्न समस्याओं को ख़त्म होने में समय लगेगा। ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कड़ी परीक्षा जेनेवा समझौते पर व्यवहार के हवाले से होगी कि हम आपसी विश्वास कायम करने की सलाहियत रखते हैं या नहीं, इस समझौते पर पूरी जिम्मेदारी और सावधनी से अमल करना होगा। जौहरी प्रोग्राम से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के लिए ईरानी प्रतिनिध रज़ा नजफी का कहना है कि माह जनवरी के प्रथम सप्ताह में हम जनेवा समझौते पर अमल की शुरूआत कर सकेंगे।

शाम में 24 घंटे के दौरान आंतरिक्ष बमबारी में 50 की मौत

शाम के अलीपूर राज्य के अल्बाब शहर में दो दिन से की जा रही शासनीय आंतरिक्ष बमबारी में कम से कम 50 लोगों की मौत हो गयी। शाम की आब्जरवरवेट्री फार ह्यूमन राइट्स के अनुसार बागियों के जेरे कन्ट्रोल अल्बाब में फौज ने विस्फोटक पदार्थ से भरी छड़ें गिरायी जिसमें कम से कम 24 लोगों की मौत हुयी। मरने वालों में दो स्त्रियां और चार बच्चे भी शामिल हैं। यह मौतें अल्बाब के उसी बाजार में हुयी हैं जहां एक दिन पहले ही इसी प्रकार के आंतरिक्ष बमबारी में 26 लोग मारे गये थे। स्टेट न्यूज एजेन्सी ने शहर की स्थिति की रिपोर्टिंग करते हुये कहा कि शामी फौजियों ने अल्बाब में विशेष कार्यवायी करते हुए एक इस्लामी ट्रिव्यूनल तबाह कर दिया। इसी बीच एक मरटर बम से फ्रान्सीसी स्कूल को भी निशाना बनाया।

सैहूनी फ़ौज ने मस्जिदे अक़्सा की बेहुरमती की

फिलस्तीन में काबिज़ यहूदीआबादकारों और इसराईली फौजीकर्मियों ने एक बार फिर क़िब्ल–ए–अव्वल की बेहुरमती की मुजरिमाना हरकत करते हुए मस्जिद में उपस्थित विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ मारपीट किया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने सूचना केन्द्र फिलस्तीन को बताया कि मंगल को यहूदीआबादकारों और सैहूनी एंटलीजेन्स कर्मियों, फौज और पुलिस की एक बड़ी तादाद ने मराकशी दरवाजे से मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल होकर तलमूदी तालीमात के अनुसार पहले धार्मिक रूसूमात अदा कीं। फिर किब्ला अव्वल में घूमते रहे। इस अवसर पर सैहूनी पुलिस ने भी उन्हें फुल पुरूफ़ सुरक्षा दे रखी थी।

एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि कम से कम 100 यहूदी फ़ौजियों का ग्रुप एक साथ किब्ला–ए–अव्वल में दाख़िल हुआ। इन में सैहूनी एंटलीजेंस के कर्मी भी शामिल थे जिनकी दूर से पहचान की जा सकती थी। यह लोग मस्जिदे अक़्सा में देर तक घूमते रहे। उसके पश्चात वहां पर उपस्थित विद्यार्थी और मस्जिद के सुरक्षाकर्मी ने उन्हें वहां से निकालने की कोशिश की तो उन्होने जवाबी आक्रमण कर दिया। उस समय पुलिस ने किसी टकराव से पूर्व ही यहूदियों को वहां से सुरक्षित तौर से बाहर निकाल दिया।

अधिपति इसराईली फौज ने उत्तरी घाटी उर्दुन में अपने बिल्डोजरों से कार्यवाही करते हुए कई फिलस्तीनी घर गिरा डाले जिसके परिणाम में कई कुटुम्ब बे घर हो गये। स्थानी सूत्रों ने बताया कि इसलाईली ने फौज ने उत्तरी उर्दुन के गांव यरज़ा के समीप चरवाहों के घर ध्वस्त कर दिये। उन का कहना था कि बकरियों को पालन करके जीवन यापन करने वाले फिलस्तीनी कुटुम्बों को इस ठंडे मौसम में बे घर कर दिया गया है। सूत्रों ने बताया कि फौजियों ने इन कुटुम्बों को घर से निकालने के दौरान एक 40 वर्षीय स्त्री के सिर पर हमला किया जिसके कारण वह जख्मी हो गयी।

मराकश के प्रधानमंत्री अब्दुल्ला बिन केरान ने अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुओं से मांग की है कि वह फिलस्तीन की सुरक्षा और उसकी स्वतंत्रा के लिए वास्तविकता पर आधारित दृष्टिकोण अपनाये और फिलस्तीन की स्वतंत्रा के लिए साहसिक निर्णय करे केन्द्रीय सूचना फिलस्तीन के अनुसार मराकशी प्रधानमंत्री बिन केरान ने इन विचारों का स्पष्टीकरण क़तर की राजधानी दोहा में ''फिलस्तीन की समस्या का भविष्य और राष्ट्रीय प्रोग्राम'' विषय से आयोजित एक अधिवेशन में अपने सम्बोधन में किया। उन्होंने ने कहा कि मराकश की जनता फिलस्तीनियों को भूले नहीं हैं बल्कि पीड़ित फिलस्तीनी जनता वर्षों से मराकशी जनता के दिलों में बसे हुये हैं। उन्होंने कहा कि इसराइल शक्तिशाली नहीं बल्कि आलमे इस्लाम और अरब देशों में आपसी मतभेदों ने सैहूनी सूबे को "शक्तिशाली" बना दिया है और यह कोई नयी बात भी नहीं बल्कि पिछले 50 वर्षों से आलमे–इस्लाम और अरब मुमालिक इसी स्तिथि से गुजर रहा है। मुसलमान और अरब देशों की दोस्ती और बन्धुत्व खत्म हो चुका है।

प्रधान मन्त्री बिन कैरान का कहना था कि समस्या फ़िलस्तीन के हल के लिए जिस साहस और सूझबूझ की जरूरत थी उसका प्रदर्शन नहीं किया जा सका है। अगर सभी मुसलमान देश मिलकर इसराईल पर दबाव डालें तो फिलस्तीन की स्वतंत्रा का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। उन्होंने कहा कि इस समय आलमे–इसलाम में फिलसतीनियों के लिए हमदर्दी में भी कमी आती जा रही है। बिन केरान ने कुछ अरब देशों की ओर से पीडित फिलस्तीनी जनता को यथासम्भव सहयोग जारी रखने का प्रयत्न करने वाले देशों के चरित्र की प्रशंसा की। उन्होंने ने कहा कि फिलस्तीन की स्वतंत्रा सभी मुसलमान और अरब देशों के आपसी सहयोग से सम्भव है।

शाम के अधिकृत क्षेत्र ''घाटी गोलान'' में जारी अभ्यास युद्व के दौरान टेंक उलटने से इसराली फौज के चार लोग बुरी तरह से जख़्मी हो गये हैं। इसराइली रेडियो की रिपोर्ट के अनुसार घाटी गोलान में जारी अभ्यास के दौरन फ़ौज का एक टैंक उलट गया जिसमें सवार चार फौजीकर्मी जख़्मी हो गये। जख्मियों को हेलिकाप्टर के द्वारा ''रिम्बाम''मिलेट्री चिकित्सालय में स्थानान्तरित कर दिया गया है। रिपोर्ट में अस्पताल सूत्रों के द्वारा बताया गया है कि ज़ख़्मी हाने वाले दो फौजियों की हालत खतरे में है जब्कि दो को कम चोटें आयी हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इसराइली फौज का टैंक एक बारूदी सुरंग से टकराने के बाद होने वाले धमाके के परिणाम में पलट गया। इस घटना के पश्चात टैंक में आग लग गयी थी। फ़ौज ने घटना की छानबीन शुरू कर दी है।